Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

रामायण के आलोक में हनुमच्चरित् की प्रासंगिकता

धर्मेन्द्र कुमार
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग,
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

डॉ. देवनारायण पाठक
संस्कृत–विभागाध्यक्ष
नेहरू ग्राम भारती मानित
विश्वविद्यालय, प्रयागराज,उत्तर प्रदेश।

सारांश– आधुनिक मनोविज्ञान के जनक विलियम जोन्स ने लिखा है कि ''मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही बन जाता है। अतः यदि हनुमान् जी का स्मरण, चिंतन, दर्शन तथा आराधन किया जाये तो निश्चय ही उनके आधिदैविक तथा आध्यात्मिक गुणों का प्रभाव पड़ेगा। हमें ऐसी विभूतियों का अनुकरण करना होगा जो हमारा आध्यात्मिक उद्‌बोधन कर सकें। श्री हनुमान् ऐसे ही अनूठे और आध्यात्मिक व्यक्तित्व के देवता हैं। श्री हनुमान् का चिंतन और स्मरण तथा उनके व्यक्तित्व का अनुकरण करने से हमें चरित्र, नैतिकता, निःस्वार्थ–सेवा, निष्काम–कर्म, अथक परिश्रम, अहंकार से मुक्ति, आध्यात्मिक अनुभूति की प्रेरणा मिलेगी तथा हम संकीर्ण भावों से ऊपर उठेंगे। टकराव और संघर्ष का परित्याग करके शांति, सद्‌भाव एवं मैत्री भाव से जीना प्रारम्भ कर सकेंगे।

मुख्य शब्द– रामायण, हनुमच्चरित्,दर्शन,आध्यात्मिक, महाभारत,मानव।

मनुष्य अपने जीवन में यों तो कई छोटे–छोटे उद्‌देश्यों की निर्मिति करता है, किन्तु आध्यात्मिकता की दृष्टि से देखें तो उसका परम उद्‌देश्य है– 'आत्मसाक्षात्कार'। मानव न केवल सृजन की भौतिक प्रक्रिया का संवाहक है, अपितु अस्तित्व के आध्यात्मिक रहस्य का बोध करना भी उसका परम लक्ष्य है। महाभारत में ''न हि मानुषात् श्रेष्ठतरो हि कश्चित्''[i] कहकर मानव की श्रेष्ठता का ही प्रतिपादन किया गया है। उसका अभिप्राय ही यही है कि मनुष्य में अपनी आत्मिक शक्तियों को पहचानने की अद्‌भुत क्षमता है। इन शक्तियों को पहचान कर वह परमात्मा के स्वरूप को प्राप्त कर सकता है। श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में उपदेष्टा कृष्ण ने कहा है कि मानव जीवन का परम लक्ष्य आत्मस्वरूप में प्रतिष्ठित हो जाना है–

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः।
आत्मन्येव तु सन्तुष्टस्वतस्व कार्य न विद्यते।।[ii]

इस धरा पर ऐसे अनेक महात्मा जन्मे जिन्होंने मानवता को कल्याण का मार्ग दिखाया। विभिन्न ऋषि, महर्षि, राम, श्रीकृष्ण, श्री हनुमान्, गौतम बुद्ध, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द सदृश महात्माओं ने मानव को आध्यात्मिक ऊँचाई पर पहुँचने के सूत्र बताये।

किन्तु आधुनिक भौतिक एवं वैज्ञानिक होड़ के परिणामस्वरूप चिन्ता, कुण्ठा, प्रतिस्पर्धा, अवसाद, उद्वेग, तनाव, निराशा और भय की अतिव्याप्ति हो चुकी है। विज्ञान के सहारे भौतिक एवं बौद्धिक प्रगति की पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ मानव चन्द्रमा पर पहुँचकर तथा मंगल जैसे ग्रहों पर रोबोट भेजकर अंतर्ग्रहीय सभ्यता की स्थापना के लिये प्रयासरत है, परन्तु भावात्मक एवं आध्यात्मिक स्तर पर हम प्रगति नहीं कर पा रहे हैं, जिसके कारण मन अशांत है, हृदय में पीड़ा की परिपूर्णता है तथा षड्‌विकारों से हम ग्रसित हैं।

ऐसी परिस्थिति में हमें दिव्य विभूतियों का स्मरण करके उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा लेनी होगी तभी हम आध्यात्मिक प्रगति पर चल सकेंगे।

श्री हनुमान् का व्यक्तित्व एवं चरित ऐसी ही महिमा से मण्डित है। परमेश्वर की भक्ति की सबसे लोकप्रिय अवधारणाओं एवं आर्षकाव्य रामायण में श्रीराम के सहायकों में हनुमान् का नाम अग्रगण्य है। श्री हनुमान् अमरत्व प्राप्त सप्तमनीषियों में भी श्रद्धापूर्वक नमस्कृत किये जाते हैंः–

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः।।

सम्पूर्ण रामायण महाकाव्य पढ़ेंगे तो श्री हनुमान् विभिन्न रूपों में हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं। कभी अनन्य भक्त के रूप में, कभी निःस्वार्थ सेवक के रूप में, कभी निष्काम कर्मयोगी के रूप में तो कभी, योद्धा, विद्वान् और धैर्यवान् के रूप में उनके दर्शन होते हैं।

रामायण में हनुमान् का प्रथम दर्शन किष्किन्धाकाण्ड के द्वितीय सर्ग में होता है। श्रेष्ठ आयुधों को धारण किये हुये श्रीराम व लक्ष्मण को ऋष्यमूक पर्वत पर देखकर सुग्रीव आशंकित हो व्याकुल हो जाते हैं। तब दूरदर्शी नीतिज्ञ, व्यवहारविद् एवं वाक्पटु हनुमान् उनकी शंका का निराकरण करते हुये कहते हैं–

सम्भ्रमस्त्यज्यतामेष सर्वैर्वालिकृते महान्।
मलयोऽयं गिरिवरो भयं नेहास्ति वालिनः।।[iii]

अर्थात् आप बाली के कारण होने वाली घबराहट का त्याग कर दीजिये यह मलय नामक श्रेष्ठ पर्वत है, यहाँ बाली से कोई भय नहीं।

इसके बाद हनुमान् का उल्लेख गुप्तचर के रूप में प्राप्त होता है–

कपिरूपं परित्यज्य हनुमान् मारुतात्मजः।
भिक्षुरूपं ततो भेजे शठबुद्धितया कपिः।।[iv]

इस विचार से कि कपिरूप पर किसी का विश्वास नहीं हो सकता, अतः उन्होंने कपिरूप त्यागकर भिक्षुरूप धारण किया। राजा के हितैषी मन्त्री का कर्तव्य होता है कि वह अपने स्वामी का प्रत्येक दृष्टि से हित करे। हनुमान् ने भी यही किया तथा अपने प्रयासों से राम–सुग्रीव की मैत्री करवाई।

ततोऽग्निं दीप्यमानं तौ चक्रतुश्चप्रदक्षिणम्।
सुग्रीवो राघवश्चैव वयस्यत्वमुपागतौ।।[v]

हनुमान् की शास्त्रज्ञता तो महर्षि ने स्वयं श्रीराम के मुख से प्रमाणित करवाया है–

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेद धारिणः।
नासामवेदविुषः शक्यमेवं विभाषितुम्।।[vi]

हनुमान् की स्वामिभक्ति भी उच्चकोटि की है–

भृतकार्यो हनुमता सुग्रीवस्य कृतं महत्।
एवं विधाय स्वबलं सदृशं विक्रमस्य च।।[vii]
यो हि भृत्यो नियुक्तः सन् भर्त्रा कुर्माणि दुष्करे
कुर्यात् तदनुरागेण तामाहुः पुरुषोत्तमः।।

अर्थात् हनुमान् ने समुद्र–लंघन आदि कार्यों के द्वारा अपने पराक्रम के अनुरूप बल प्रकट करके एक सच्चे सेवक के रूप में सुग्रीव का बहुत बड़ा कार्य सम्पन्न किया है। जो सेवक स्वामी द्वारा किसी दुष्कर कार्य के लिये नियुक्त होने पर उसे पूर्ण करके तद्नुरूप अन्य कार्य भी सम्पन्न करता है, वह सेवकों में उत्तम कहा गया है।

हनुमान् की वीरता और बुद्धिमत्ता पर प्रभु राम को इतना अधिक विश्वास है कि सीता–अन्वेषण हेतु प्रस्थान करते समय उन्होंने अपनी मुद्रिका हनुमान् को ही सौंपी, क्योंकि उनकी अन्तरात्मा जानती थी कि सीता–अन्वेषण का कार्य हनुमान् ही सम्पन्न करेंगे–

अतिबल बलमाश्रितस्तवाहं
हरिवर विक्रम विक्रमैरनल्पैः।
पवनसुत यथाधिगम्यते सा
जनकसुता हनुमंस्तथा कुरुष्व।।[viii]

ध्यातव्य है कि रावण कोई साधारण वीर नहीं था। उसे प्रजापति ब्रह्मा से गरुड, नाग, यक्ष, दैत्य, दानव एवं देवताओं द्वारा अवध्य होने का वरदान प्राप्त था। ऐसी स्थिति में हनुमान् का यह कथन कि वे रावण को भी लंकापुरी के साथ उठा लाएँगे, उनके पराक्रमी, महाबली एवं आत्मविश्वासी होने का प्रमाण है। गिरिश्रेष्ठ मैनाक भी हनुमान् के वेग व सामर्थ्य की प्रशंसा करते हैं–

वेगवन्तः प्लवन्तो ये प्लवगा मारुतात्मज।
तेषां मुख्यतमं मन्ये त्वामहं कपिकुंजर।।[ix]

प्रायः देखा जाता है कि शारीरिक बल से युक्त होकर साधारण व्यक्ति भी मदोन्मत्त हो उठता है। उसमें अहंकार का समावेश हो जाता है, किन्तु हनुमान् जैसे बुद्धि–बल से युक्त महाबलियों के सम्बन्ध में ऐसा सर्वथा अदृष्ट ही होता है। अपने पराक्रम की सीमा को भलीभाँति जान चुके हनुमान् का कथन है कि वे अकेले ही राक्षसों सहित लंकापुरी का विध्वंस कर महाबली रावण का वध करने में सक्षम है, किन्तु यह उनकी विनम्रता व अहंकार–शून्यता का ही प्रमाण है कि इस उत्तम कार्य में वे अस्त्र ज्ञाता, महाबली, वानरों की सहायता की भी अभिलाषा करते हैं–

"अहमेकोऽपि पर्याप्तः सराक्ष सगणां पुरीम्।
तां लंकां तरसा हन्तु रावणं च महाबलम्।
किं पुनः सहितो वीरैर्बलवद्भिः कृतात्मभिः।
कृतास्त्रैः प्लवगैः शक्तैर्भवाद्भिर्विजयैषिभिः।[x]

हनुमान् अप्रतिहत, अप्रतिम, अभूतपूर्व पराक्रम सम्पन्न हैं। श्रीराम उनके बल की प्रशंसा करते हुए महर्षि अगस्त्य से कहते हैं कि हनुमान् का जैसा पराक्रम है, वह इन्द्र, विष्णु व वरूण में भी अदृष्ट है–

न कालस्य न शक्रस्य न विष्णोर्वित्तपस्य च।
कर्माणि तानि श्रूयन्ते यानि युद्धे हनूमतः।।[xi]

श्रीराम यह स्वीकार करते हैं कि यदि हनुमान् न होते तो कदाचित् सीता का पता भी नहीं चलता–

"हनूमान् यदि मे न स्याद् वानराधिपतेः सखा।
प्रवृत्तिमपि को वेत्तुं जानक्याः शक्तिमान् भवेत्।।[xii]

उचित–अनुचित–भेदज्ञान हनुमान् की अन्यान्य चारित्रिक विशेषताओं में से एक है। संयमित शब्दों से अपना पक्ष रखना जिससे श्रोता की गरिमा भी बनी रहे और अपना मन्तव्य भी निवेदित हो जाये, इस कला में हनुमान् सिद्धहस्त हैं। विभीषण के राम–शरणागत होने पर सुग्रीव, अंगद, शरभ, जाम्बवान् इत्यादि ने श्रीराम से उसकी निष्ठा व विश्वसनीयता की परख करने का विचार प्रस्तुत किया, किन्तु हनुमान् उनके विचारों को दोषयुक्त बताते हैं।

इस प्रकार वाल्मीकीय रामायण का आद्योपान्त अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि बाल्यकालीन चापल्य जनित औत्सुक्य के कारण सूर्य को रसालफल समझकर आस्वादनार्थ तत्पर हुये हनुमान् का चारित्रिक गुण ग्रन्थ की गति के साथ ही साथ पल्लवित–पुष्पित हुआ है। एक स्वामिभक्त सेवक के रूप में प्रथम दर्शन देकर श्री हनुमान् जहाँ स्वामि–सर्वस्वता का आदर्श स्थापित करते हैं, वहीं अपनी अप्रतिम वीरता, व्यवहार वैदग्ध्यता अगाध, ज्ञानराशि, दूरदर्शित्व, नीतिज्ञता, श्लाघनीय संवाद कुशलता तथा अप्रतिम विनम्रता व गूढ़ दार्शनिकता के द्वारा ग्रन्थ में पदे–पदे नित–नूतन प्रतिमान प्रस्तुत करते हैं।

नवयुवकों में चरित्र, नैतिकता, उत्साह, साहस, कर्त्तव्यपालन और निष्ठा की महती आवश्यकता है। युवक देश के भावी कर्णधार हैं। उनका शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास होना परमावश्यक

है। श्री हनुमान् जी की आराधना और उपासना करने से उनको, उनके गुणों व चरित्र का अनुसरण करने की प्रेरणा प्राप्त होगी। वे निर्भय और निडर होंगे तथा वे अन्याय, अत्याचार और अनाचार का उन्मूलन करने हेतु कटिबद्ध होंगे।

आज मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा, आध्यात्मिक सिद्धान्तों के प्रचार तथा चारित्रिक उत्कर्ष की महती आवश्यकता है। आधुनिक मनोविज्ञान के जनक विलियम जोन्स ने लिखा है कि ''मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही बन जाता है। अतः यदि हनुमान् जी का स्मरण, चिंतन, दर्शन तथा आराधन किया जाये तो निश्चय ही उनके आधिदैविक तथा आध्यात्मिक गुणों का प्रभाव पड़ेगा। हमें ऐसी विभूतियों का अनुकरण करना होगा जो हमारा आध्यात्मिक उद्‌बोधन कर सकें। श्री हनुमान् ऐसे ही अनूठे और आध्यात्मिक व्यक्तित्व के देवता हैं। श्री हनुमान् का चिंतन और स्मरण तथा उनके व्यक्तित्व का अनुकरण करने से हमें चरित्र, नैतिकता, निःस्वार्थ–सेवा, निष्काम–कर्म, अथक परिश्रम, अहंकार से मुक्ति, आध्यात्मिक अनुभूति की प्रेरणा मिलेगी तथा हम संकीर्ण भावों से ऊपर उठेंगे। टकराव और संघर्ष का परित्याग करके शांति, सद्‌भाव एवं मैत्री भाव से जीना प्रारम्भ कर सकेंगे।

सन्दर्भ–सूची

i. महाभारत–शांतिपर्व–299/20
ii. भगवद्‌गीता–3/17
iii. किष्किन्धाकाण्ड, द्वितीय सर्ग–14
iv. किष्किन्धाकाण्ड, तृतीय सर्ग, श्लोक–2
v. किष्किन्धाकाण्ड, पंचम सर्ग–15
vi. किष्किन्धाकाण्ड, तृतीय सर्ग, श्लोक–28
vii. युद्धकाण्ड, प्रथम सर्ग, श्लोक–6–7
viii. किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग–44, श्लोक–17
ix. सुन्दरकाण्ड, सर्ग–1, श्लोक–118
x. सुन्दरकाण्ड, सर्ग–59, श्लोक–118
xi. सुन्दरकाण्ड, सर्ग–35, श्लोक–4
xii. सुन्दरकाण्ड, सर्ग–35, श्लोक–10